पत्रकारिता में भाषा का रखें ख्याल-प्रो दीक्षित

हिंदी विवि के संचार एवं मीडिया अध्ययन केन्द्र द्वारा 'संचार की बदलती भाषा' पर हुआ गंभीर विमर्श

उदबोधन देते हुए प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित। मंच पर प्रतिकुलपति प्रो. अरविंदाक्षन, प्रो. जोशी व डॉ. अख्तर आलम

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केन्द्र द्वारा 'संचार की बदलती भाषा' विषय पर विशेष व्याख्यान देते हुए प्रख्यात साहित्यकार, लखनऊ विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के संस्थापक अध्यक्ष प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने कहा कि आज पत्रकारिता में भाषा का विशेष ख्याल नहीं रखा जा रहा है, जबकि पत्रकारिता की सबसे बड़ी शर्त है-सही भाषा की पहचान करना। हर अभिव्यक्ति पर यही शर्त लागू होती है। इसीलिए शब्द को ब्रह्म कहा गया है। हिंदी के शब्दों का सबसे बड़ा गुण उसकी सम्प्रेषण क्षमता है। इसके हर अक्षर के अलग-अलग गुण हैं, जो हिंदी को बेहतर बनाते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विवि के प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने की। इस अवसर पर मीडियाविद् प्रो.रामशरण जोशी व संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के सहायक प्रोफेसर डॉ.अख्तर आलम मंचस्थ थे। प्रो. दीक्षित ने कहा की भाषा की सबसे बड़ी चुनौती है कि संचार से कोई भी अछूता न रहे। उन्होंने बताया की हिंदी पाँच रूप में देश में काम कर रही है। पहली हिंदी वह है जो देश के आम लोगों द्वारा बोली जाती है। इसकी पहुँच देश के 70 फीसदी लोगों तक है। इसका क्षेत्र बहुत बड़ा है। दूसरी हिंदी वह है जिसमें साहित्य लिखा जाता है। इसी तरह तीसरी हिंदी राजभाषा है जिसकी पहुँच देश के हर आदमी तक नहीं है। चौथे प्रकार

की हिंदी वह है जिसमे आरंभ से लेकर अंत तक शिक्षा प्राप्त करते हैं लेकिन इसका सही विकास नहीं हो पा रहा है। पाँचवें प्रकार की हिंदी को उन्होंने संचार की हिंदी बताते हुए कहा कि इसकी महत्ता व्यापक है।

उन्होंने कहा कि पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती है तीव्रता के साथ भाषा का ख़याल रखना। यह काम इतना तीव्र होता है कि कई बार इसमें वर्तनी का उल्लंघन हो जाता है। एक उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि देश में 3500 पत्र हिंदी मे छपते हैं। यदि सभी पत्रों में गलत शब्द छपने लगे तो भाषा का क्या होगा। उन्होंने कहा कि कई बार गलती लगातार छपने के कारण सही लगने लगती है, इसका ख्याल रखना चाहिए। भाषा के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि एक शब्द के तीन अर्थ निकलते हैं। पत्रकार को सही रिपोर्ट के अनुसार सही विश्लेषण कर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। मुहावरे का प्रयोग रिपोर्ट को जीवंत बना देता है। इसका प्रयोग विज्ञापन में भी देखने को मिलता है। भाषा के प्रचलन को उन्होंने ज्यादा महत्वपूर्ण बताया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो. दीक्षित का स्वागत विवि के प्रतिकुलपति प्रो.अरविंदाक्षन ने पुष्पगुच्छ से तथा प्रो. रामशरण जोशी ने चरखा प्रदान कर किया। प्रो. रामशरण जोशी ने प्रो. दीक्षित का परिचय करवाया। प्रो.जोशी ने बताया कि प्रो. दीक्षित साहित्य के विद्वान होने के बावजूद पत्रकारिता पर अपनी पकड़ रखते हैं। मंच का संचालन विवि के सहायक प्रोफेसर डॉ. अख्तर आलम ने किया तथा सहायक प्राध्यापक संदीप वर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विवि के शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी